हिंदी (लोकभारती)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 2 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1) **गद्यांश से प्राप्त ज्ञान सिंह संबंधी जानकारी –**

- कारखाने में काम करना
- मवेशी पालने का शौक
- उदार विचारवाला
- अब नौकरी से अवकाश प्राप्त

(2) **करामत अली की गाय का वर्णन–**

- नाम : लक्ष्मी
- उम्र : अधेड़ उम्र
- नस्ल : जर्सी
- स्थिति : बूढ़ी हो जाने के कारण अब दूध देना बंद कर दिया था।

(3) (i) बरस – साल

(ii) गाय – धेनु

(iii) दूध – दुग्ध

(iv) जरूरत – आवश्यकता।

(4) आदि मानव जब से एक स्थान पर समूह बनाकर रहने और खेती करने लगा, तभी से मनुष्यों और पशुओं का साथ रहा है। कृषि कार्य में उसे कई पशुओं को पालतू बनाना पड़ा था। भारतीय समाज में पशुपालन की परंपरा तभी से चली आ रही है। देश के प्रत्येक कृषक की यह इच्छा रहती है कि उसके पास बैलों की एक जोड़ी और एक गाय अवश्य हो। ये जानवर उसके लिए मात्र खेती में काम आने वाले, दूध देने वाले, सवारी तथा रखवाली के काम आने वाले ही नहीं होते, वरन ये कृषक परिवार का अभिन्न अंग होते हैं। घर के सभी सदस्यों को इनसे अत्यंत प्रेम होता है। ये अपने बच्चों के समान इन पशुओं के खान-पान और इनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं।

प्र. 1. (आ)

(1) (i) पिता के न रहने पर लेखक पर यह बीता – उन्हें बैंक में नौकरी करनी पड़ी।

(ii) लेखक के जन्म के समय उनके पिता यह थे – उत्तर प्रदेश के पुलिस मंत्री।

(iii) लेखक सदा यह कल्पना किया करते थे – उनके पास बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए।

(iv) लेखक के पिता प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ यह गाड़ी थी – इंपाला शेवरलेट

(2) **लेखक द्वारा संतरी को हिदायत –**

- सैलूट-वैलूट नहीं मारना
- धीरे से गेट खोलना
- दरवाजा आवाज करे, तो उसे बंद नहीं करना
- दरवाजा खुला छोड़ देना

(3) (i) आर्डर (ii) रेजिडेंस (iii) गेट (iv) सैलूट।

(4) बचपन में बच्चों को हर चीज के बारे में उत्सुकता होती है। उनके मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ आती हैं। इन कल्पनाओं को साकार रूप देने की वे कोशिश भी करते हैं। पर वे दुनियादारी से अनभिज्ञ होते हैं। इसलिए कभी-कभी उनसे गलतियाँ हो जाया करती हैं। कुछ बच्चे डर के कारण इन गलतियों को अपने माता-पिता से छुपाने का प्रयास करते हैं। मगर ये गलतियाँ जब खुल जाती हैं, तब ये बच्चे लज्जित होते हैं। इस तरह की गलतियों को अपने माता-पिता को न बताकर बच्चे बड़ी भूल करते हैं। अपनी गलतियों को अपने माता-पिता से बता देने वाले बच्चे फायदे में रहते हैं। समझदार माता-पिता बच्चों की गलतियों पर डाँटने-फटकारने के बजाय उन्हें प्यार से समझाते हैं। वे उन्हें स्थिति से निपटने का मार्ग बताकर उनकी सहायता करते हैं। ऐसे बच्चे भविष्य में इस तरह की गलतियाँ करने से बचे रहते हैं। माता-पिता सदा बच्चों के हित के बारे में सोचते हैं। इसलिए बच्चों को अपने मन में उत्पन्न किसी तरह की कल्पना के बारे में अपने माता-पिता को बताना चाहिए और उसके बारे में उनकी सलाह के अनुसार कार्य करना चाहिए। उन्हें उनसे डरना नहीं चाहिए।

प्र. 1. (इ)

(1) (i) **कमरे का किराया –**

- तीन पाउंड
- प्रति सप्ताह

(ii) **लेखक इनके प्रति कृतज्ञ हैं –**

- अतीत में जिन लोगों ने लेखक की मदद की है
- भविष्य में जो लोग उनकी मदद करेंगे

(2) कृतज्ञता एक महान गुण है। कृतज्ञता का अर्थ है अपने प्रति की गई सहायता के लिए श्रद्धावान होकर सहायता करने वाले व्यक्ति के समक्ष सम्मान प्रदर्शन करना। कृतज्ञता मानवता की सर्वोत्कृष्ट विशेषता है। यह हमें आभास कराती है प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रूप में और कभी भी यदि किसी व्यक्ति ने कोई सहयोग या सहायता प्रदान की है, उसके लिए हम यदि कुछ न कर सकें, तो हृदय से आभार अवश्य प्रकट करें। कृतज्ञता दिव्य प्रकाश है। यह दी हुई सहायता के प्रति आभार प्रकट करने का भाव है। जो दिया है, हम उसके ऋणी हैं, इसकी अभिव्यक्ति ही कृतज्ञता है। सुअवसर मिलने पर उसे समुचित रूप से लौटा देना इस भाव का मूल मंत्र है। इस गुण के बल पर समाज और इन्सान में एक सहज संबंध विकसित हो सकता है। भावना और संवेदना का जीवंत वातावरण निर्मित हो सकता है। जो दे, उससे लाभ लेकर उसको भी बदले में यथासंभव दें।

प्र. 2. (अ)

(1)

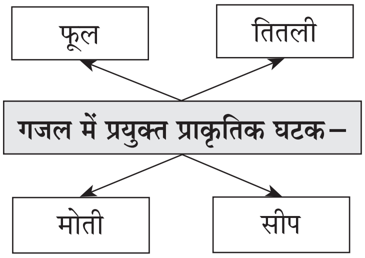

(2) (i) जुगनू – पुल्लिंग (ii) रोशनी – स्त्रीलिंग
(iii) मोती – पुल्लिंग (iv) सीप – स्त्रीलिंग।

(3) यदि कोई कोमल कली फूल बनने से डर रही हो तो... कली जानती है कि उसके खिलते ही तितली उसका रस चूसने के लिए आएगी और फूल बनी कली को परेशान करेगी। तुम उस खिलते हुए फूल के लिए अपशकुन बन कर उसे डराने का काम मत करो। अर्थात तुम उसके लिए परेशानी का कारण मत बनो। तुम उसे डराओ मत। उसके डर को दूर करने में उसकी मदद करो।

यह संसार मनुष्यों का एक सागर है। भीड़ में अनगिनत चेहरे हर तरफ दिखाई देते हैं। हे ईश्वर, मैं चाहता हूँ कि मैं जिसे भी देखूँ, मुझे उसी में तुम नजर आओ। तुम तो सर्वव्यापक हो।

प्र. 2. (आ)

(1)

(i) अर्थ	– नई कविता में
(ii) सुवर्ण	– काव्य कृतियों में
(iii) चाँदी	– बालों में
(iv) सोना	– आँखों में

(2) (i) सोना – (1) (धातु) सोना (2) नींद लेना।
(ii) अर्थ – (1) संपत्ति (पैसा) (2) (साहित्य में) मतलब।
(iii) नोट – (1) (रुपया) नोट (2) (परीक्षा के) टिप्पणी।
(iv) चाँदी – (1) (धातु) चाँदी (2) (बालों में सफेदी) चाँदी।

(3) अधिकारी कड़ककर कवि से छुपाकर रखी गई चाँदी निकालने के लिए कहते हैं। कवि चाँदी का अर्थ चाँदी जैसे सफेद हो गए अपने बालों से जोड़कर गुस्से से कहते हैं, ''चाँदी तो मेरे सिर के बालों में आ रही है।'' अधिकारी हैरान होकर पूछते हैं कि उनके नोट (रुपये) कहाँ हैं, तो वे नोट का संबंध विद्यालय की परीक्षा के नोटों से जोड़कर जवाब देते हैं कि परीक्षा के नोट तो वे परीक्षा से एक महीने पहले तैयार करेंगे।

प्र. 3. (अ)

(1) (i) **मनुष्य जीवन की स्थितियाँ –**

- गुलामी करना
- गुलामी करवाना

(ii) **लेखक इनकी सेवा में लगे हैं –**

- मोटर
- कंप्यूटर

(2) जिन कामों या चीजों का हमें शौक होता है, जिसमें हमारी रुचि होती है, उसके लिए हम समय, सुविधा सब निकाल लेते हैं। रुचि सफलता की वाहक है। हम सभी अपनी रुचि के कामों को करते समय उसमें डूब जाते हैं। उसी का परिणाम होता है सफलता। शिक्षा काल में जिस विषय में हमारी रुचि होती है, उसे पढ़ने में हम सारी रात भी जग लेते हैं, जबकि किसी ऐसे विषय की पुस्तक खोलते ही आँखें नींद से भर आती हैं, जो हमें पसंद न हो। व्यायाम, तैराकी, बागवानी, चित्रकला, गायन, वादन आदि ऐसे अनेक कार्य हैं, जिनका यदि शौक हो तो मनुष्य घंटों बिताने पर भी उनसे ऊब अनुभव नहीं करता। किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए उसमें रुचि होना परम आवश्यक है। बिना रुचि के आगे बढ़ने की संभावना बहुत कम होती है। जिस काम में हमारी रुचि होती है, उसे करने के लिए हम अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं। न दिन देखते हैं, न ही रात। थकान शब्द तो मानो हमारे शब्दकोश में कभी था ही नहीं।

प्र. 3. (आ)

(1) **खूब लड़ने वाली मर्दानी वीरांगनाएँ –**

- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
- रजिया सुलताना
- दुर्गावती
- चाँद बीबी

(2) आजकल स्त्रियों के अपमान की अनेक घटनाएँ पढ़ने-सुनने में आती हैं। स्त्रियों पर तरह-तरह के अत्याचार होते हैं। यह बड़े दुख की बात है।

हमारे देश में प्राचीन काल से नारियों का सम्मान करने की परंपरा रही है। हमारे यहाँ नारी को देवी का सम्मान दिया जाता रहा है और उसकी पूजा करने की परंपरा रही है। दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, महाकाली आदि देवियों की हम श्रद्‌धा और भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं। सीता, सावित्री तथा अनुसूया जैसी महान नारियाँ हमारी आदर्श रही हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता:' अर्थात जहाँ नारियों की पूजा की जाती है वहीं देवता निवास करते हैं। आज हमारे देश में स्त्रियाँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ बराबरी के स्तर पर काम कर रही हैं। आज की नारी पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक हो चुकी है। नारी को सम्मान देने से स्त्रियाँ ही सम्मानित नहीं होंगी, बल्कि उन्हें सम्मान देने वाले खुद भी गौरवान्वित होंगे।

प्र. 4.

(1) कुछ – (अनिश्चित संख्यावाचक) विशेषण।

(2) (i) हमारी बेटी गाय से भी सीधी है।

(ii) नीरज बीमार था, इसलिए ऑफिस नहीं गया।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि-भेद
विद्‌यार्थी	**विद्‌या + अर्थी**	**स्वर संधि**

अथवा

निर्जीव	निः + जीव	**विसर्ग संधि**

(4)

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i) लगे	लगना
(ii) है	होना

(5)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) देखना	दिखाना	दिखवाना
(ii) दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना

(6) (i) चैन ना मिलना।

अर्थ : बेचैनी अनुभव करना।

वाक्य : इलाके में बढ़ती आपराधिक घटनाओं से पुलिस को चैन नहीं मिल रहा था।

(ii) झेंप जाना।

अर्थ : लज्जित होना, शरमाना।

वाक्य : हिसाब-किताब में गड़बड़ी पकड़े जाने पर मुंशी जी झेंप गए।

अथवा

- मुहावरा : नजर आना।

आगरा के किले की ऊपरी मंजिल से ताजमहल का गुंबद नजर आता है।

(7)

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) ईश्वर की	संबंध कारक
(ii) किसी से	करण कारक

(8) ''गरम-गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा।''

(9) (i) मंत्री जी ने लोगों को एक मशवरा दिया है।

(ii) ठीक ग्यारह बजे मंत्री जी बाहर आए।

(iii) गुरुदेव ने अपने समय पर स्नान किया था।

(10) (i) संयुक्त वाक्य।

(ii) (1) अच्छा! फूल अपनी गंध नहीं बेचेगा।

(2) फूल शायद एक-एक के घर जाएगा।

(11) (i) आपने कभी अपने लिखने की सार्थकता की परख की है।

(ii) पहले प्रकृति हमारी माता के समान थी।

(iii) इनके बदन पर पाला गिरता है।

प्र. 5. (अ), (आ) तथा (इ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय-शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।